Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

इतिहास

भाग - 2

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 5

यात्रियों के नजरिए

भाग - 6

Pritesh Joshi

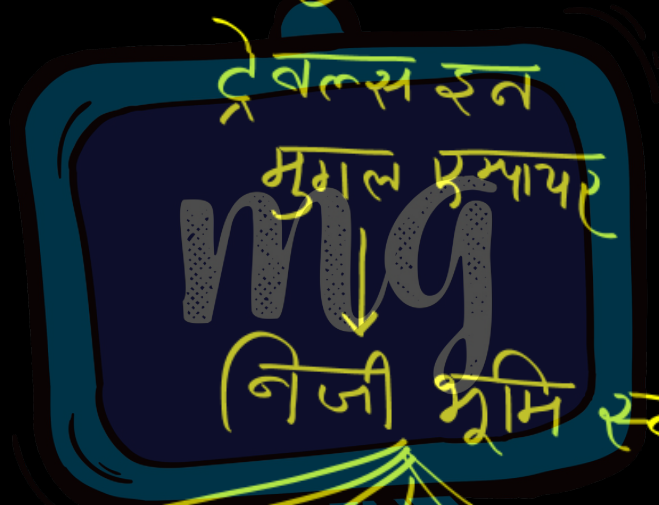
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

फ्रांस → फ्रांस्वा बर्नियर

↓

ट्रेवल्स इन मुगल एम्पायर



निजी भूमि स्वामित्व ×

- गरीब
- बर्बर
- दूषित
- कृषि
- शहर → राजा ×

Under CSR Support by ipca | Foundation

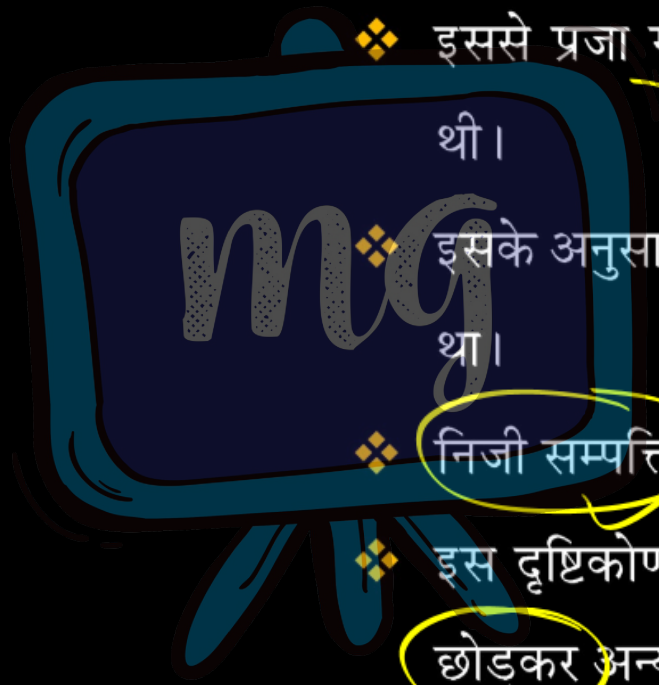
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर के विचारों का प्रभाव

- बर्नियर के विचारों से 18वीं शताब्दी में पश्चिमी विचारक भी प्रभावित हुए।
- फ्रांसीसी दार्शनिक मॉन्टेस्क्यू ने इसके वृत्तान्त का उपयोग ''प्राच्य निरंकुशवाद'' के सिद्धांत को विकसित करने में किया।
- इस सिद्धांत के अनुसार एशिया में शासक अपनी प्रजा पर निर्बाध प्रभुत्व का उपयोग करते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- इससे प्रजा गरीबी में तथा दास बनकर रहती थी।
- इसके अनुसार भूमि पर राजा का स्वामित्व होता था।
- निजी सम्पत्ति अस्तित्व में नहीं थी।
- इस दृष्टिकोण से राजा और उसके अमीरों को छोड़कर अन्यों का जीवन यापन बहुत मुश्किल से हो पाता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- 19वीं शताब्दी में कार्ल मार्क्स ने इन्हीं सिद्धांतों को आगे बढ़ाया।
- नाम दिया "एशियाई उत्पादक शैली के सिद्धांत"।
- तर्क दिया कि भारत तथा अन्य एशियाई देशों में उपनिवेशवाद से पूर्व अधिशेष का अधिग्रहण राज्य द्वारा होता था।

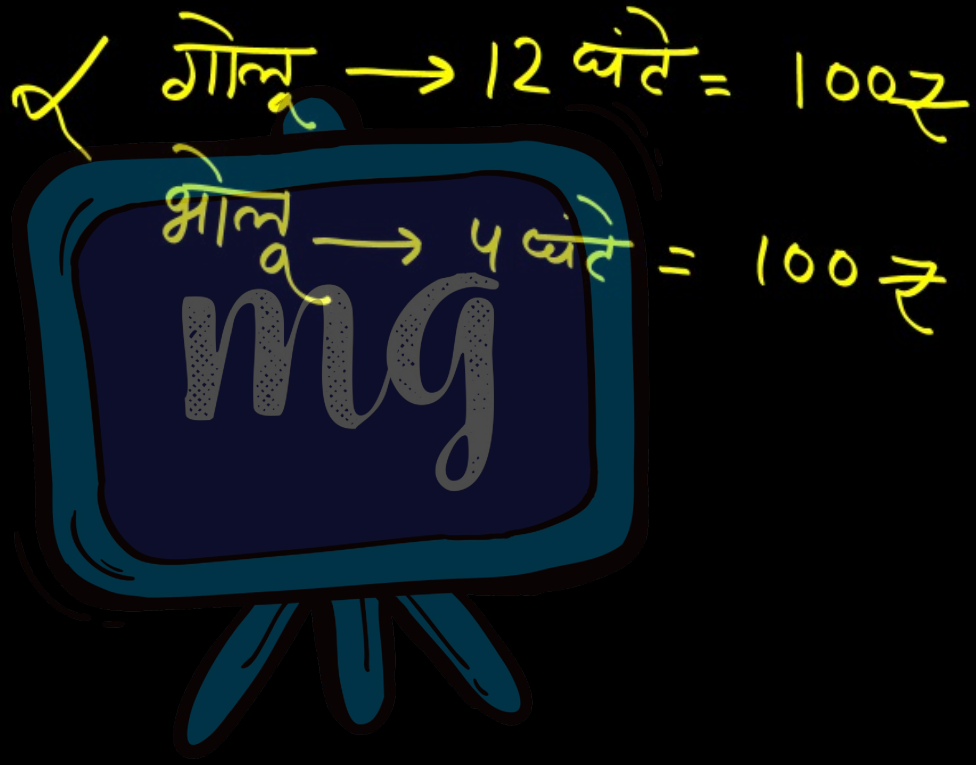
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



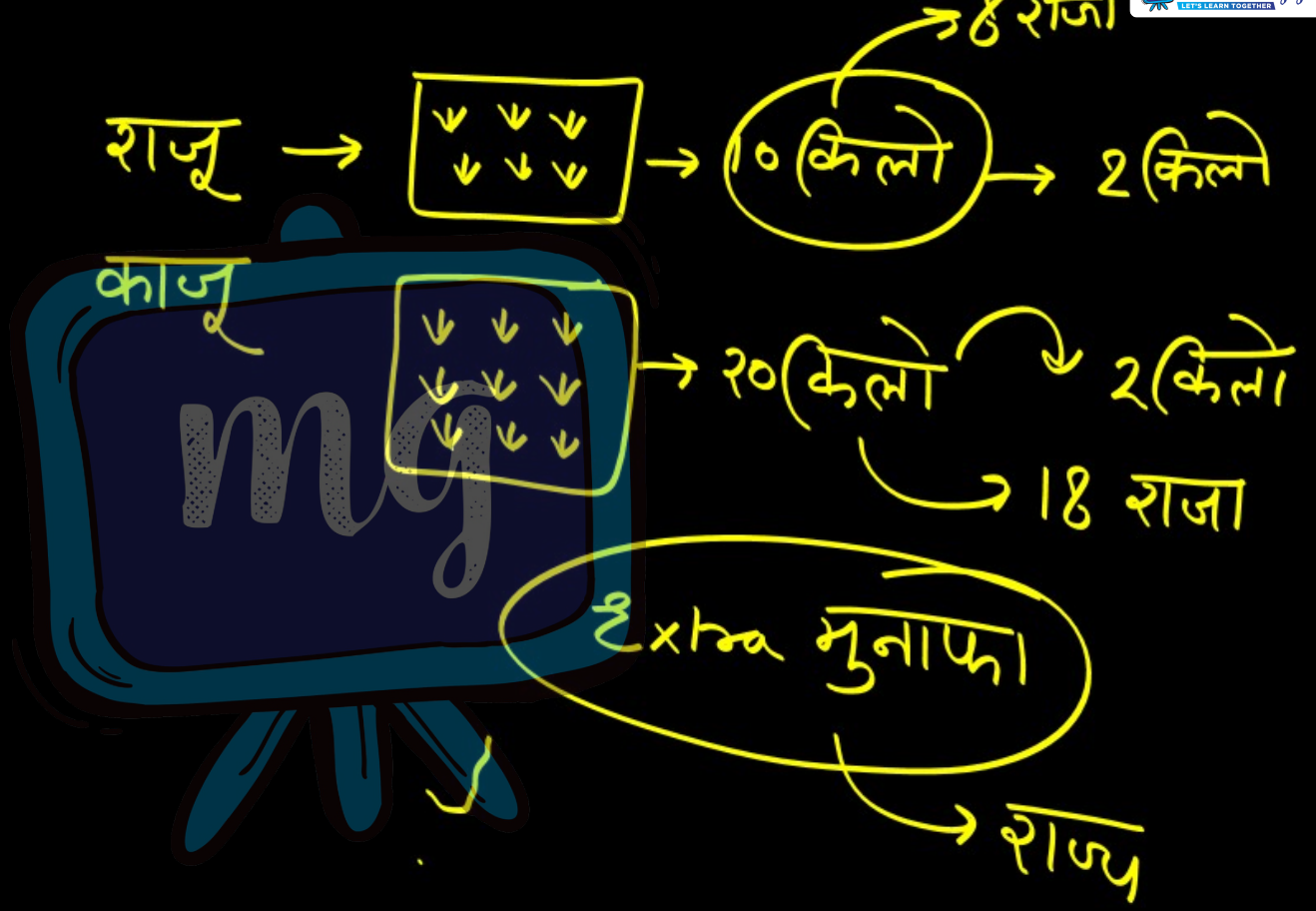
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

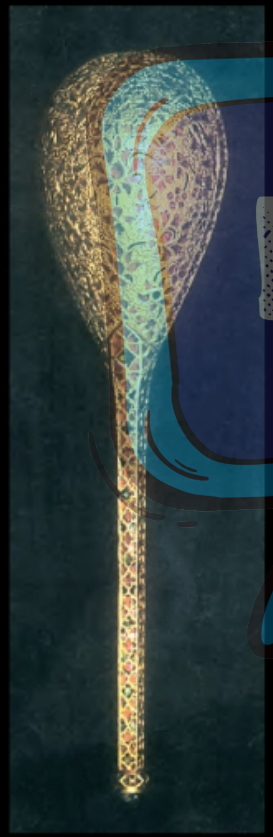
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

एक अधिक जटिल सामाजिक सच्चाई :-

- बर्नियर के वर्णन में मुगल राज्य को निरंकुश दिखाने का प्रयास किया है।
- उनका विवरण जटिल सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करता है, जैसे –

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

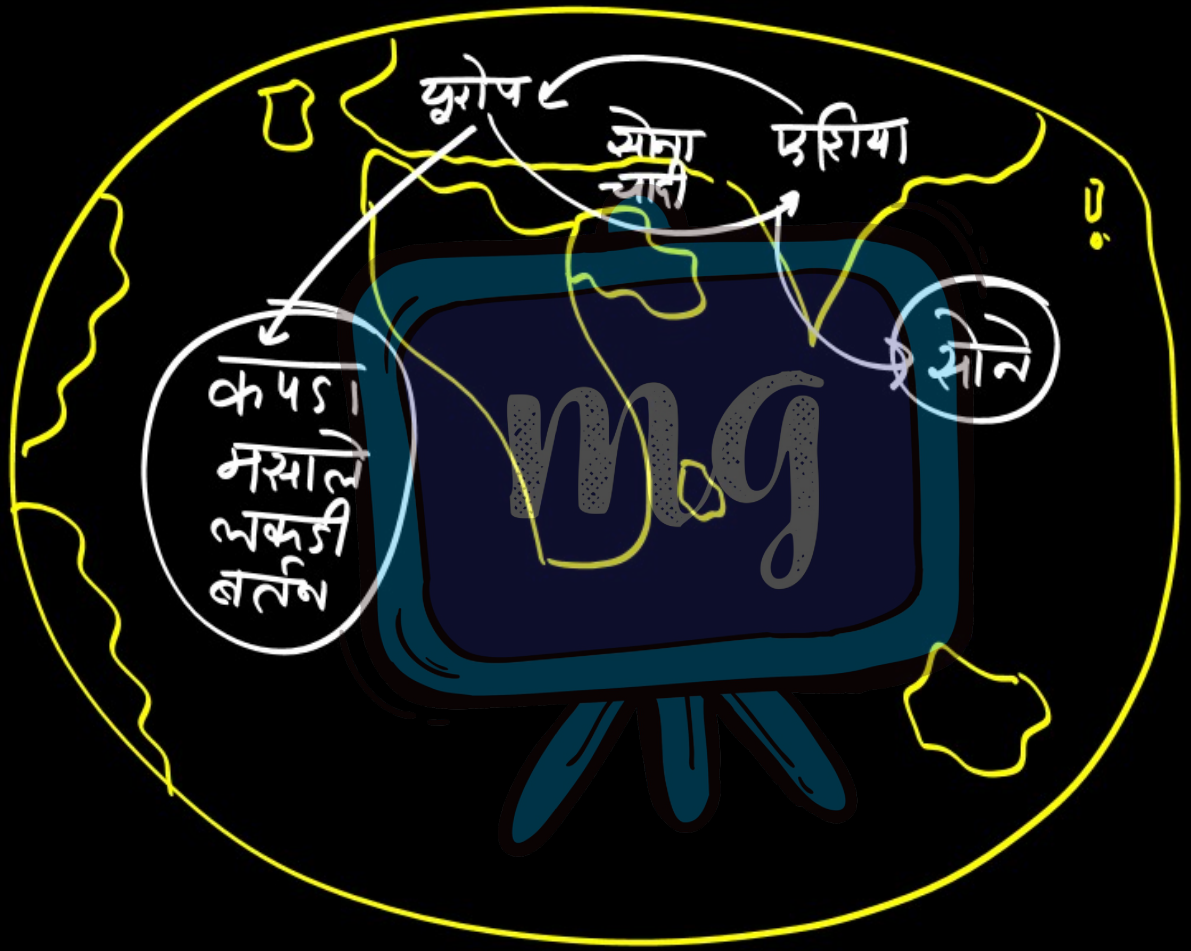


शिल्पकारों के बारे में वर्णन किया कि :-

- उनके पास अपने उत्पादों को अच्छा बनाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था।
- क्योंकि राज्य लाभ/मुनाफे का अधिग्रहण कर लेता था इसलिए शिल्पकारों से सम्बन्धित उत्पादन पतनोन्मुख था।
- साथ ही वह यह भी मानता है कि पूरे विश्व से बड़ी मात्रा में बहुमूल्य धातुएँ भारत में आती थी क्योंकि उत्पादों का सोने-चाँदी के बदले निर्यात होता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



व्यापार सम्बन्धित वर्णन में कहा है कि –

- व्यापारिक गतिविधियां सुदूर प्रदेशों तक फैली हुई थी।
- पूरे विश्व से बहुमूल्य धातुएं भारत आती थी। उत्पादों का निर्यात सोने-चांदी के बदले होता था।
- व्यापारिक समुदाय समृद्ध था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

85% गाँव 15% शहर

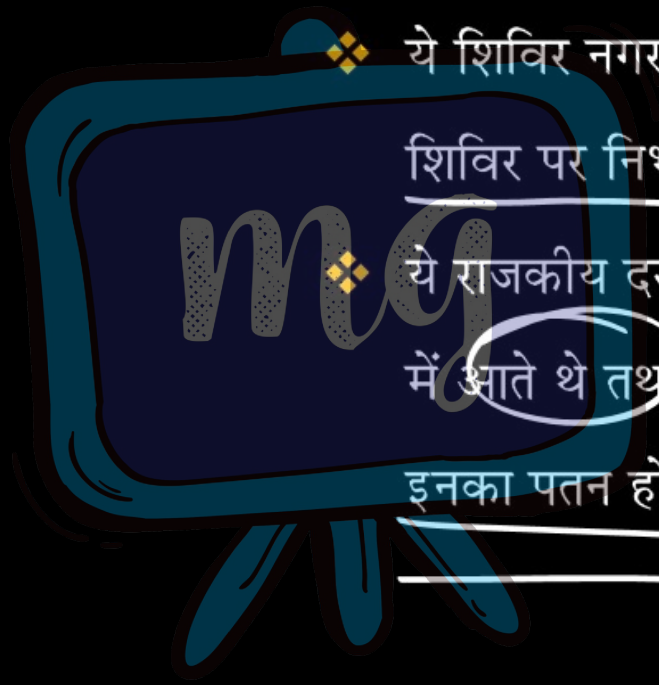
भारत > यूरोप

नगरों का वर्णन–

- 17वीं शताब्दी में कुल जनसंख्या की लगभग 15 प्रतिशत आबादी नगरों में रहती थी।
- यह अनुपात पश्चिमी यूरोप के नगरीय जनसंख्या के अनुपात से अधिक था।
- फिर भी बर्नियर मुगलकालीन शहरों को "शिविर-नगर" कहता है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- ये शिविर नगर अपने अस्तित्व के लिए राजकीय शिविर पर निर्भर रहते थे।
- ये राजकीय दरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते थे तथा उनके चले जाने के बाद तेजी से इनका पतन हो जाता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

Q. बनिर्यर के क्यारो का यूरोपीय समाज पर क्या प्रभाव पडा ?

Q. 'शिविर नगर' क्या थे, बनिर्यर के वृतान्त अनुसार चर्चा करे ?



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

महिलाऐं : दासियां, सती तथा श्रमिक :-

- अधिकतर यात्री जिन्होंने यात्रा वृत्तान्त लिखे पुरूष थे।
- जिन्हे महिलाओं की स्थिति का विषय रुचिकर व जिज्ञासा पूर्ण लगता था।
- कभी-कभी वे सामाजिक पक्षपात को सामान्य मान लेते थे, जैसे -
- बाजारों में दास/ दासियाँ किसी भी अन्य वस्तु की तरह खुले आम बेचे जाते थे और नियमित रूप से भेंट स्वरूप भी दिए जाते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

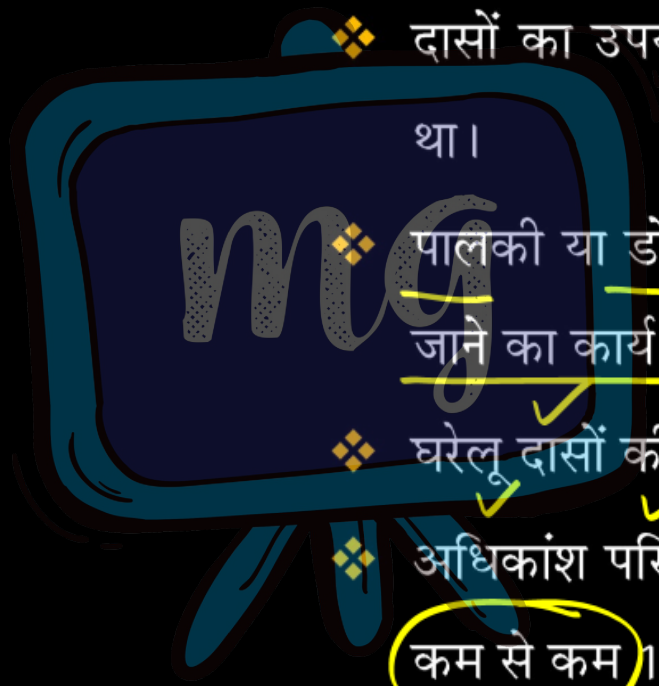
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- इब्न बतूता ने भी सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक को भेंट देने हेतु घोड़े व दास खरीदे थे।
- इब्न बतूता के अनुसार दासों में काफी विभेद हुआ करता था।
- सुल्तान की सेवा में कार्यरत कुछ दासियां संगीत व गायन में कुशल/दक्ष हुआ करती थी।
- अमीरों पर नजर रखने हेतु सुल्तान दासियों को नियुक्त करता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

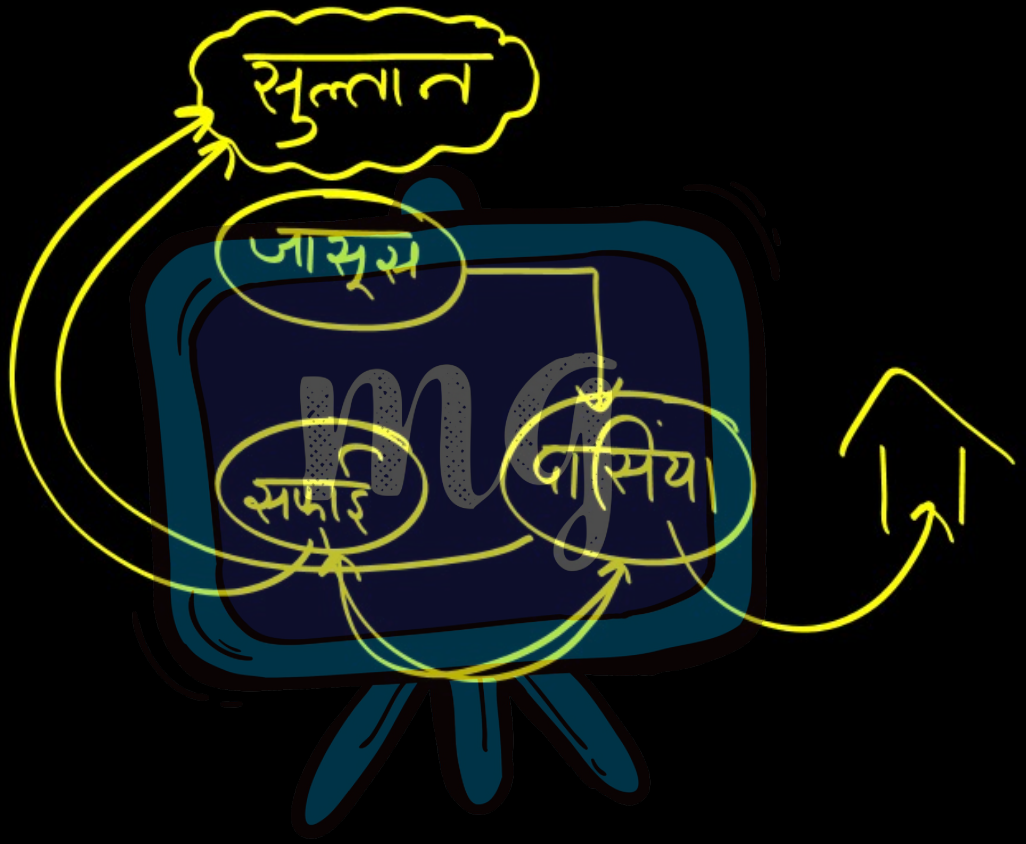
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- दासों का उपयोग घरेलू श्रम में भी किया जाता था।
- पालकी या डोले में महिलाओं व पुरूषों को ले जाने का कार्य दास करते थे।
- घरेलू दासों की कीमत बहुत कम होती थी।
- अधिकांश परिवार दास रखने में समर्थ होते थे।
- कम से कम 1-2 दास रखते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

दासियाँ :-

इब्न बतूता अपने वर्णन में बताते है कि :-

- सम्राट हर छोटे या बड़े अमीर के साथ अपने एक दास को रखता था जो सम्राट के लिए जासूसी का कार्य करते थे।
- वह महिला सफाई कर्मचारियों को भी नियुक्त करता था जो बिना बताये घर में घुस जाती थी। वे दासियों से सूचनाऐं प्राप्त कर लेती थी।
- दासियों को लूट, हमलों व अभियानों के दौरान बलपूर्वक प्राप्त किया जाता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

Q. इब्नबतूता ने मध्यकालीन भारत की पास प्रथा का वर्णन किस प्रकार किया है?

Q. सुल्तान किस प्रकार पार्सियों का इस्तेमाल अमीरों की जासूसी के लिए किया करता था?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर तथा सती प्रथा :-

- सती प्रथा के वर्णन को बर्नियर ने मुख्य रूप से चुना।
- सती प्रथा में कुछ महिलाऐं प्रसन्नता से मृत्यु को चुन लेती थीं तथा अन्य को सती होने के लिए बाध्य किया जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

६. बोनियर के अनुसार सती प्रथा का वर्णन करें ?



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

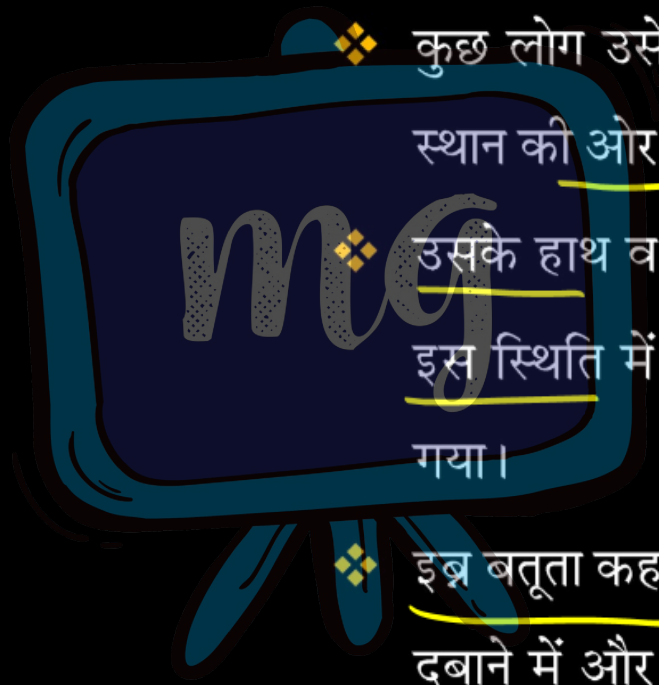
सती बालिका :-

बर्नियर के वृत्तान्तों में लाहौर की घटना का वर्णन सबसे मार्मिक है। उसके अनुसार :-

- बर्नियर ने लाहौर में 12 वर्ष की एक सुन्दर अल्प व्यस्क विधवा को सती होते देखा।
- उस भयानक नर्क की ओर जाते समय व असहाय बच्ची जीवित से अधिक मृत प्रतीत हो रही थी। वह काँपते हुए बुरी तरह रो रही थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- कुछ लोग उसे जबरदस्ती पकड़ कर उस घातक स्थान की ओर ले जाकर लकड़ियों पर बैठा देते है।
- उसके हाथ व पैर बांध दिये ताकि भाग न पाये। इस स्थिति में उस मासूम को जिन्दा जला दिया गया।
- इब्न बतूता कहता है कि ''मैं अपनी भावनाओं को दबाने में और उनके कोलाहलपूर्ण तथा व्यर्थ के क्रोध से बाहर आने से रोकने में असमर्थ था।''

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

काल रेखा (कुछ यात्री जिन्होंने वृत्तान्त छोड़)	
दसवीं–ग्यारहवीं शताब्दियाँ	
973–1048	मोहम्मद इब्न अहमद अबू रेहान अल बिरूनी (उजबेकिस्तान से)
तेरहवीं शताब्दी	
1254–1323	मार्को पोलो (इटली से)
चौदहवीं शताब्दी	
1304–77	इब्न बतूता (मोरक्को से)
पंद्रहवीं शताब्दी	
1413–82	अब्द अल–रज्जाक, कमाल अल–दिन इब्न इस्हाक अल–समरकंदी (समरकंद से)
1466–72 (भारत में बिताए वर्ष)	अफानासी निकितिच निकितन (पंद्रहवीं शताब्दी, रूस से)

mg